K–191

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सत्रीय कार्य(Assignment Work)सत्र – जुलाई–जून 2024–25

एम.ए. (संस्कृत) पूर्व

विषय – वेद निरूक्त एवं वैदिक साहित्य **प्रश्नपत्रः प्रथम**

पूर्णांक : 30 **न्यूनतम उत्तीर्णांकः 12**

नोटः– परीक्षार्थी प्रत्येक खण्ड के निर्देशों को ध्यान से पढ़कर प्रश्नों को हल करें।

परीक्षार्थी हेतु निर्देश :

सत्रीय कार्य–1

खण्ड अ – अति लघुउत्तरीय प्रश्न (1 से 8) कुल 08 प्रश्न है, सभी प्रश्न अनिवार्य। प्रति प्रश्न 0.5 अंक उत्तर शब्द सीमा 1–2 शब्द या एक वाक्य।

खण्ड ब – अति लघुउत्तरीय प्रश्न (9 से 14) कुल 06 प्रश्न है जिसमें से कोई 04 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 01 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 75 या आधा पेज।

सत्रीय कार्य–2

खण्ड स – लघुउत्तरीय प्रश्न (15 से 18) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 03 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 02 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 150 या एक पेज।

सत्रीय कार्य–3

खण्ड द – अर्द्ध दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (19 से 22) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 02 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 04 अंक का होगा। शब्द सीमा 300 या दो पेज।

सत्रीय कार्य–4

खण्ड ई – दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (23 से 24) कुल 02 प्रश्न है जिसमें से कोई 01 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 08 अंक का होगा। उत्तर की शब्द सीमा 600–750 या 4–5 पेज।

सत्रीय कार्य– 1

खण्ड—अ

1. उषासूक्त में कौन-सा छन्द है ?
2. परिमृशत्ति का अर्थ क्या है ?
3. 'न निर्वद्धाः' का अर्थ लिखिए।
4. काल सूक्त के ऋषि का नाम लिखिए।
5. 'सम्भूति' का अर्थ लिखिए।
6. ईशावास्योपनिषद् किस शाखा से सम्बद्ध है ?
7. 'शतपथ ब्राह्मण' किस वेद का ग्रन्थ है ?
8. वेद का मुख किसे कहा गया है ?

खण्ड—ब

9. 'अग्निर्होता कवि क्रतुः' का भाव स्पष्ट कीजिए।
10. 'अश्वावतीगोमतीर्विश्वा' का अर्थ समझाइए।
11. 'स न इन्द्र शिवः' मन्त्र का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
12. ' मा गृधाः कस्यस्विद् धनम्' की व्याख्या कीजिए।
13. 'अग्ने नय सुपथा राये' को स्पष्ट कीजिए।
14. गोपथ ब्राह्मण का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

सत्रीय कार्य– 2

खण्ड—स

15. इन्द्र के स्वरूप का वर्णन कीजिए।
16. कालसूक्त निहित शिक्षा का प्रतिपादन कीजिए।
17. स्वेक्षण तथा परेक्षण की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।
18. सामवेद की विषयवस्तु की विवेचना कीजिए।

सत्रीय कार्य– 3

खण्ड—द

19. विराटपुरुष की महत्ता का वर्णन कीजिए।
20. षड्भाव विकार का विस्तृत वर्णन कीजिए।
21. ईशावास्योपनिषद् के अनुसार आत्मा का वर्णन कीजिए।
22. वेदा⏲ों में ज्योतिष के महत्व का प्रतिपादन कीजिए।

सत्रीय कार्य– 4

खण्ड—इ

23. ईशावास्योपनिषद् के दार्शनिक महत्व की समीक्षा कीजिए।
24. वेदा⏲ों का विवेचन करते हुए उनके महत्व पर प्रकाश डालिए।

आवश्यक निर्देश :–

1. **सत्रीय लेखन कार्य को घर से लिखकर उत्तरपुस्तिका दिनांक 28 फरवरी 2025 तक संबंधित अध्ययन केन्द्र में जमा करें। सत्रीय कार्य स्व–हस्तलिखित होना चाहिए। दूसरे के द्वारा लिखा गया, फोटोकापी या पुस्तक का हिस्सा चिपकाना अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।**
2. **छात्र सत्रीय कार्य लेखन हेतु अन्य संदर्भित पुस्तकों का भी उपयोग कर सकते है।**
3. **सत्रांत परीक्षा सत्र जुन–जुलाई 2024–25 का सैद्धांतिक प्रश्न पत्र का स्वरूप सत्रीय कार्य जुन–जुलाई 2024–25 जैसा ही रहेगा।**
4. **सत्रीय कार्य के मूल्यांकन में छात्र द्वारा किए गए अध्ययन एवं लेखन, विषय की व्याख्या तथा लेखन में मौलिकता को आधार बनाया जायेगा। इसमें अध्ययन लेखन पर अधिकतम 60 प्रतिशत (18 अंक) दिया जावेगा, विषय–वस्तु की व्याख्या के लिए अधिकतम 20 प्रतिशम (6 अंक) तथा सृजनात्मक, मौलिक–सोच प्रदर्शित होने पर अधिकतम 20 प्रतिशत (6 अंक) प्राप्त हो सकते है। इस प्रकार मूल 100 प्रतिशत (30 अंक) का विभाजन रहेगा।**

K-192

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सत्रीय कार्य(Assignment Work)सत्र – जुलाई–जून 2024–25

एम.ए. (संस्कृत) पूर्व

विषय – पालि प्राकृत एवं भाषा विज्ञान **प्रश्नपत्रः द्वितीय**

पूर्णांक : 30 **न्यूनतम उत्तीर्णांकः 12**

नोटः– परीक्षार्थी प्रत्येक खण्ड के निर्देशों को ध्यान से पढ़कर प्रश्नों को हल करें।

परीक्षार्थी हेतु निर्देश :

सत्रीय कार्य–1

खण्ड अ – अति लघुउत्तरीय प्रश्न (1 से 8) कुल 08 प्रश्न है, सभी प्रश्न अनिवार्य। प्रति प्रश्न 0.5 अंक उत्तर शब्द सीमा 1–2 शब्द या एक वाक्य।

खण्ड ब – अति लघुउत्तरीय प्रश्न (9 से 14) कुल 06 प्रश्न है जिसमें से कोई 04 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 01 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 75 या आधा पेज।

सत्रीय कार्य–2

खण्ड स – लघुउत्तरीय प्रश्न (15 से 18) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 03 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 02 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 150 या एक पेज।

सत्रीय कार्य–3

खण्ड द – अर्द्ध दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (19 से 22) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 02 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 04 अंक का होगा। शब्द सीमा 300 या दो पेज।

सत्रीय कार्य–4

खण्ड ई – दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (23 से 24) कुल 02 प्रश्न है जिसमें से कोई 01 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 08 अंक का होगा। उत्तर की शब्द सीमा 600–750 या 4–5 पेज।

सत्रीय कार्य– 1

खण्ड–अ

1. सिंह बाहु राजा कहाँ के निवासी थे ?
2. शल्य कितने प्रकार के होते हैं ?
3. स्वप्नवासवदत्तम् में विदूषक का नाम क्या है ?
4. पाइअ–संगहो किस प्राकृत में लिखा गया है ?
5. भाषा का चरम अवयव क्या है ?
6. जर्मन भाषा किसके अन्तर्गत समाहित है ?
7. अग्निना सिंचति में किसका अभाव है ?
8. ग्रीक के भाषा वैज्ञानिक का नाम लिखिए।

खण्ड–ब

9. वानरेन्द्र जातकम् कथा का सारांश लिखिए।
10. शौरसेनी एवं मागधी प्राकृत की विशेषताएँ लिखिए।
11. भाषा के आधारों की विवेचना कीजिए।
12. अपभ्रंश मुक्तक के किन्हीं दो पद्यों का उल्लेख कीजिए।
13. अर्थ परिवर्तन के कारकों की विवेचना कीजिए।
14. वाक्य का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

सत्रीय कार्य– 2

खण्ड–स

15. गोतमस्य उप्पादो कथा का हिन्दी अनुवाद कीजिए।
16. गाथा सप्तशती के संकलितांश का सारांश लिखिए।
17. इरानी उपशाखा का परिचय दीजिए।
18. वाक्य एवं पद का सम्बन्ध स्पष्ट कीजिए।

सत्रीय कार्य– 3

खण्ड–द

19. मायादेवी के स्वप्न का वर्णन करते हुए फल का निर्देश कीजिए।
20. स्वप्नवासवदत्तम् के चेरी–विदूषक संवाद का वर्णन कीजिए।
21. भाषा की सामान्य विशेषताओं एवं प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।
22. वाक्य के आवश्यक तत्वों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

सत्रीय कार्य– 4

खण्ड–इ

23. आधुनिक भारतीय भाषा वैज्ञानिकों के कार्यों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
24. अर्थ तत्त्व एवं सम्बन्ध तत्त्व की समीक्षा कीजिए।

आवश्यक निर्देश :–

1. सत्रीय लेखन कार्य को घर से लिखकर उत्तरपुस्तिका दिनांक 28 फरवरी 2025 तक संबंधित अध्ययन केन्द्र में जमा करें। सत्रीय कार्य स्व–हस्तलिखित होना चाहिए। दूसरे के द्वारा लिखा गया, फोटोकापी या पुस्तक का हिस्सा चिपकाना अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।
2. छात्र सत्रीय कार्य लेखन हेतु अन्य संदर्भित पुस्तकों का भी उपयोग कर सकते है।
3. सत्रांत परीक्षा सत्र जुन–जुलाई 2024–25 का सैद्धांतिक प्रश्न पत्र का स्वरूप सत्रीय कार्य जुन–जुलाई 2024–25 जैसा ही रहेगा।
4. सत्रीय कार्य के मूल्यांकन में छात्र द्वारा किए गए अध्ययन एवं लेखन, विषय की व्याख्या तथा लेखन में मौलिकता को आधार बनाया जायेगा। इसमें अध्ययन लेखन पर अधिकतम 60 प्रतिशत (18 अंक) दिया जावेगा, विषय–वस्तु की व्याख्या के लिए अधिकतम 20 प्रतिशम (6 अंक) तथा सृजनात्मक, मौलिक–सोच प्रदर्शित होने पर अधिकतम 20 प्रतिशत (6 अंक) प्राप्त हो सकते है। इस प्रकार मूल 100 प्रतिशत (30 अंक) का विभाजन रहेगा।

K–203

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सत्रीय कार्य(Assignment Work)सत्र – जुलाई–जून 2024–25

एम.ए. (संस्कृत) पूर्व

विषय – व्याकरण एवं निबन्ध **प्रश्नपत्रः तृतीय**

पूर्णांक : 30 **न्यूनतम उत्तीर्णांकः 10**

नोटः– परीक्षार्थी प्रत्येक खण्ड के निर्देशों को ध्यान से पढ़कर प्रश्नों को हल करें।

परीक्षार्थी हेतु निर्देश :

सत्रीय कार्य–1

खण्ड अ – अति लघुउत्तरीय प्रश्न (1 से 8) कुल 08 प्रश्न है, सभी प्रश्न अनिवार्य। प्रति प्रश्न 0.5 अंक उत्तर शब्द सीमा 1–2 शब्द या एक वाक्य।

खण्ड ब – अति लघुउत्तरीय प्रश्न (9 से 14) कुल 06 प्रश्न है जिसमें से कोई 04 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 01 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 75 या आधा पेज।

सत्रीय कार्य–2

खण्ड स – लघुउत्तरीय प्रश्न (15 से 18) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 03 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 02 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 150 या एक पेज।

सत्रीय कार्य–3

खण्ड द – अर्द्ध दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (19 से 22) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 02 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 04 अंक का होगा। शब्द सीमा 300 या दो पेज।

सत्रीय कार्य–4

खण्ड ई – दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (23 से 24) कुल 02 प्रश्न है जिसमें से कोई 01 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 08 अंक का होगा। उत्तर की शब्द सीमा 600–750 या 4–5 पेज।

सत्रीय कार्य– 1

खण्ड–अ

1. हरिं भजति में कौन-सी विभक्ति है ?
2. रामेण बाणेन हतो बाली में कौन-सी विभक्ति है ?
3. सच् धातु के योग में कौन-सी विभक्ति होती है ?
4. ''राज्ञः पुरुषः'' में सम्बन्ध क्या है ?
5. ''शिष्यः'' में कौन-सा प्रत्यय है ?
6. ''रागः'' इस प्रयोग में कौन-सा प्रत्यय है।
7. शब्द नित्य है या अनित्य उत्तर लिखिए।
8. निबन्ध कितने प्रकार का होता है ?

खण्ड–ब

9. ''सम्बोधने च'' सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

10. ''रुच्यर्थानां प्रीयमाणः'' सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

11. किन्हीं तीन कृत्य प्रत्ययों की सूत्र सहित लिखिए।

12. कारक एवं कर्ता शब्द की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

13. शब्द नित्य और अनित्य पर पतंजलि के विचार स्पष्ट कीजिए।

14. आगम पदार्थ निरूपण भाष्य की हिन्दी व्याख्या कीजिए।

सत्रीय कार्य– 2

खण्ड–स

15. कर्म प्रवचनीय संज्ञा कहाँ-कहाँ होती है ?

16. सम्बन्ध कारक से सम्बन्धित किन्हीं दो सूत्र की विवेचना कीजिए।

17. शतृ एवं शानच् प्रत्यय से बनने वाले किन्हीं दो शब्दों के रूप लिखिए।

18. ब्राह्मण एवं आरण्यक ग्रंथों पर संक्षिप्त में निबन्ध लिखिए।

सत्रीय कार्य– 3

खण्ड–द

19. हेतु अर्थ में तृतीया क्यों होती है उदाहरण सहित लिखिए।

20. सप्तमी विभक्ति के प्रयोग हेतु किन्हीं पाँच नियमों को लिखिए।

21. ''आतोयुच्'' सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

22. अधर्माधिक्य भाष्य की व्याख्या कीजिए।

सत्रीय कार्य– 4

खण्ड–इ

23. निम्नलिखित शीर्षकों में से किसी एक पर निबन्ध लिखिए :
    (अ) शरद् ऋतु वर्णनम्
    (ब) संस्कृत भाषा महत्वम्
    (स) कालीदासः।

24. अधिकार-सूत्र ''कारके'' की समुचित व्याख्या कीजिए।

आवश्यक निर्देश :–

1. सत्रीय लेखन कार्य को घर से लिखकर उत्तरपुस्तिका दिनांक 28 फरवरी 2025 तक संबंधित अध्ययन केन्द्र में जमा करें। सत्रीय कार्य स्व–हस्तलिखित होना चाहिए। दूसरे के द्वारा लिखा गया, फोटोकापी या पुस्तक का हिस्सा चिपकाना अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।
2. छात्र सत्रीय कार्य लेखन हेतु अन्य संदर्भित पुस्तकों का भी उपयोग कर सकते है।
3. सत्रांत परीक्षा सत्र जुन–जुलाई 2024–25 का सैद्धांतिक प्रश्न पत्र का स्वरूप सत्रीय कार्य जुन–जुलाई 2024–25 जैसा ही रहेगा।
4. सत्रीय कार्य के मूल्यांकन में छात्र द्वारा किए गए अध्ययन एवं लेखन, विषय की व्याख्या तथा लेखन में मौलिकता को आधार बनाया जायेगा। इसमें अध्ययन लेखन पर अधिकतम 60 प्रतिशत (18 अंक) दिया जावेगा, विषय–वस्तु की व्याख्या के लिए अधिकतम 20 प्रतिशम (6 अंक) तथा सृजनात्मक, मौलिक–सोच प्रदर्शित होने पर अधिकतम 20 प्रतिशत (6 अंक) प्राप्त हो सकते है। इस प्रकार मूल 100 प्रतिशत (30 अंक) का विभाजन रहेगा।

K–194

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सत्रीय कार्य(Assignment Work)सत्र – जुलाई–जून 2024–25

एम.ए. (संस्कृत) पूर्व

विषय – भारतीय दर्षन **प्रश्नपत्रः चतुर्थ**

पूर्णांक : 30 **न्यूनतम उत्तीर्णांकः 12**

नोटः– परीक्षार्थी प्रत्येक खण्ड के निर्देशों को ध्यान से पढ़कर प्रश्नों को हल करें।

परीक्षार्थी हेतु निर्देश :

सत्रीय कार्य–1

खण्ड अ – अति लघुउत्तरीय प्रश्न (1 से 8) कुल 08 प्रश्न है, सभी प्रश्न अनिवार्य। प्रति प्रश्न 0.5 अंक उत्तर शब्द सीमा 1–2 शब्द या एक वाक्य।

खण्ड ब – अति लघुउत्तरीय प्रश्न (9 से 14) कुल 06 प्रश्न है जिसमें से कोई 04 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 01 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 75 या आधा पेज।

सत्रीय कार्य–2

खण्ड स – लघुउत्तरीय प्रश्न (15 से 18) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 03 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 02 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 150 या एक पेज।

सत्रीय कार्य–3

खण्ड द – अर्द्ध दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (19 से 22) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 02 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 04 अंक का होगा। शब्द सीमा 300 या दो पेज।

सत्रीय कार्य–4

खण्ड ई – दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (23 से 24) कुल 02 प्रश्न है जिसमें से कोई 01 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न08 अंक का होगा। उत्तर की शब्द सीमा 600–750 या 4–5 पेज।

सत्रीय कार्य– 1

खण्ड–अ

1. तर्कभाषा के रचनाकार है।
2. प्रमाणादि पदार्थो के तत्वज्ञान से प्राप्त होता है।
3. सत्कार्यवाद किस दर्शन से सम्बद्ध है।
4. प्रकृति–पुरुष संयोग की उपमा किससे की गयी है।
5. अण्डज पिण्डज आदि किसके भेद हैं।
6. आकाशादि के सात्विक अंश से निर्मित है।
7. योग दर्शन के प्रणेता आचार्य है।
8. हीनयान एवं महायान सम्प्रदाय का समबन्ध किससे है।

खण्ड–ब

9. "प्रमाकरणं प्रमाणम्" को स्पष्ट कीजिए।
10. निमित्त कारण किसे कहते है इसका उल्लेख कीजिए।
11. अहंकार का लक्षण लिखिए।
12. गुणों के नाम का वर्णन कीजिए।
13. चार अनुबन्ध के नाम लिखिए।
14. बौद्धदर्शन के चार भेदों का उल्लेख कीजिए।

सत्रीय कार्य– 2

खण्ड–स

15. अर्थापत्ति प्रमाण को उदाहरण सहित, स्पष्ट कीजिए।
16. प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद का वर्णन कीजिए।
17. सांख्य संमत आठ सिद्धियों के नाम लिखिए।
18. जैन दर्शन सम्यक् ज्ञान के पाँच प्रकारो का उल्लेख कीजिए।

सत्रीय कार्य– 3

खण्ड–द

19. कार्य–कारण सिद्धान्त के आशय को स्पष्ट कीजिए।
20. सांख्य दर्शन के अनुसार बन्धन एवं मोक्ष की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।
21. वेदान्त दर्शन के अनुसार पंजीकरण का विस्तृत वर्णन कीजिए।
22. नास्तिक दर्शनों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

सत्रीय कार्य– 4

खण्ड–इ

23. वेदान्त दर्शन के अनुसार ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों की उत्पत्ति की विस्तृत व्याख्या कीजिए।
24. आस्तिक दर्शनों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

आवश्यक निर्देश :–

1. **सत्रीय लेखन कार्य को घर से लिखकर उत्तरपुस्तिका दिनांक 28 फरवरी 2025 तक संबंधित अध्ययन केन्द्र में जमा करें। सत्रीय कार्य स्व–हस्तलिखित होना चाहिए। दूसरे के द्वारा लिखा गया, फोटोकापी या पुस्तक का हिस्सा चिपकाना अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।**
2. **छात्र सत्रीय कार्य लेखन हेतु अन्य संदर्भित पुस्तकों का भी उपयोग कर सकते है।**
3. **सत्रांत परीक्षा सत्र जुन–जुलाई 2024–25 का सैद्धांतिक प्रश्न पत्र का स्वरूप सत्रीय कार्य जुन–जुलाई 2024–25 जैसा ही रहेगा।**
4. **सत्रीय कार्य के मूल्यांकन में छात्र द्वारा किए गए अध्ययन एवं लेखन, विषय की व्याख्या तथा लेखन में मौलिकता को आधार बनाया जायेगा। इसमें अध्ययन लेखन पर अधिकतम 60 प्रतिशत (18 अंक) दिया जावेगा, विषय–वस्तु की व्याख्या के लिए अधिकतम 20 प्रतिशम (6 अंक) तथा सृजनात्मक, मौलिक–सोच प्रदर्शित होने पर अधिकतम 20 प्रतिशत (6 अंक) प्राप्त हो सकते है। इस प्रकार मल 100 प्रतिशत (30 अंक) का विभाजन रहेगा।**